Miranda House
UNIVERSITY OF DELHI

आंतरिक अकादमिक ऑडिट

विभाग: हिंदी

अकादमिक वर्ष: 2022-23 (1 July 2022 to 30 June 2023)

पठन-पाठन को बेहतर बनाने के लिए उठाए गए कदम

अकादमिक

- वर्ष 2022-23 से नई शिक्षा नीति (NEP) की शुरूआत हुई। इस शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं में शिक्षा को बढ़ावा मिले इस पर विशेष बल दिया गया है। विद्यार्थी हिंदी भाषा से जुड़े, उसके साहित्य, इतिहास और सांस्कृतिक परंपरा को समझे तथा हिंदी के प्रयोजनमूलक रूप को जाने इस उद्देश्य से विभाग आनर्स और बी.ए.प्रोग्राम के विद्यार्थियों को कई पाठ्यक्रमों---AEC(A/B/C/D/E), GE (A/B/C), SEC, VAC, BA Programme Minor---से जुड़ने का अवसर देता है।
- हिंदी विभाग में संभवतः दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की संख्या सर्वाधिक होती है। विभाग इन छात्राओं के सर्वांगीण विकास पर पूरा ध्यान देता है। उन्हें ऑडियो माध्यम में अध्ययन सामग्री उपलब्ध हो इसका ध्यान रखा जाता है साथ ही उनकी सुविधानुसार आंतरिक मूल्यांकन की पद्धति को अपनाया जाता है।
- विद्यार्थियों को परस्पर सहयोग से काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। सतत एवं आंतरिक मूल्यांकन के लिए प्रोजेक्ट और सामूहिक गतिविधियों को अपनाया जाता है ताकि विद्यार्थी प्रायोगिक स्तर पर भी हिंदी के विविध प्रयोगों को जाने और समझे।
- प्राध्यापक और विद्यार्थी पठन-पाठन में तकनीक (ICT) का भी समुचित प्रयोग करते हैं। प्रस्तुति के नए-नए तरीकों पर विचार-विमर्श निरंतर चलता रहता हैं।
- विद्यार्थियों को असाइनमेंट और प्रोजेक्ट आदि पूरा करने के लिए पर्याप्त समय दिया जाता है। परस्पर सहमति से विषय का निर्धारण होता है। साथ ही विषय से जुड़ी जानकारी और अध्ययन-सामग्री पर भी पर्याप्त चर्चा होती है।
- मेनटॉर-मेंटी ग्रुप्स में प्राध्यापक विद्यार्थियों के अकादमिक-विकास के साथ-साथ मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य का भी समुचित ध्यान रखते हैं।

सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ :

- भारती परिषद् विभाग की संस्था है। इसका उद्देश्य ही विद्यार्थियों के लिए,विद्यार्थियों के द्वारा पाठ्यक्रम से जुड़ी और उससे इतर गतिविधियों का संचालन करना है।
- विगत वर्षों की तरह इस वर्ष भी 'लेखक से मुलाक़ात' कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें प्रसिद्ध कथाकार और उपन्यासकार 'शिवमूर्ति' जी से विद्यार्थियों ने बातचीत की, उनके लेखन को जाना। हिंदी दिवस के मौके पर 'दिल्ली के बहुभाषिक परिप्रेक्ष्य में हिंदी : अहिंदीभाषी की यात्रा' विषय के अंतर्गत प्रो. अमिताभ चक्रवर्ती ने अपने अनुभवों को सांझा किया। 'मातृभाषा में शिक्षा' कैसे हो इस विषय पर प्रो. टी.वी.कट्टिमनि जी ने अपने विचार रखें।
- साहित्योत्सव का आयोजन विद्यार्थियों की प्रबंधन, संगठन और सृजनात्मक क्षमता को प्रोत्साहित करता है। साहित्योत्सव में इस वर्ष–दास्तान-ए-साहित्य और कव्वाली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को वाचन और गायन कौशल के नए आयामों से परिचित करवाना था।
- इसके अतिरिक्त विद्यार्थी और प्राध्यापक कॉलेज और विश्वविद्यालय स्तर पर होने वाले सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों से जुड़े रहते हैं। उनमें अपनी भागीदारी निभाते हैं। इसी के साथ कई प्राध्यापक और विद्यार्थी एन.सी.सी, एन.एस.एस, यू.बी.ए आदि में भी सक्रिय हैं।

चुनौतियाँ :

- UGCF में पाठ्यक्रम का ढांचा अपने आप में एक चुनौती है। इस ढांचे के अनुसार हिंदी का पठन-पाठन कई स्तरों और सरणियों में हो सकता। इस आरंभिक अवस्था में किसी भी तरीके की स्पष्टता को पाने और समझने में काफ़ी परिश्रम करना पड़ रहा है।
- प्रत्येक कोर पेपर को पढ़ाने के लिए 3+1 का प्रावधान है। तीन लेक्चर में पाठ्यक्रम को इस तरह से पढ़ाना कि वह विद्यार्थियों के अधिगम का हिस्सा बन जाए, प्राध्यापकों और विद्यार्थियों दोनों के लिए चुनौती है।
- इस नीति में विद्यार्थियों को सात पेपर एक सेमेस्टर में पढ़ने हैं। इसी के साथ आंतरिक मूल्यांकन के साथ-साथ सतत मूल्यांकन के लिए भी निरंतर कार्य करना है। इस कारण विद्यार्थियों के लिए पढ़ाई और अन्य गतिविधियों के बीच संतुलन कायम करना भी आसान नहीं है।
- बदले हुए पाठ्यक्रम के अनुरूप अध्ययन-सामग्री की भी अभी पर्याप्त कमी है। ख़ासतौर से दृष्टिबाधित छात्राओं के लिए।

भविष्यगत योजनाएँ :

- विभाग UGCF में हिंदी के पठन-पाठन की जो संभावनाएँ हैं उनसे विद्यार्थियों को अवगत कराने के लिए कॉउसिलिंग सेंशन चलाने का विचार कर रहा है। ताकि विद्याथियों के पास सही जानकारी और समझ हो और वे सही समय पर विषय-चयन-प्रक्रिया को पूरा कर सकें।

- दृष्टिबाधित छात्राओं के लिए नए पाठ्यक्रम से जुड़ी ऑडियो सामग्री तैयार करना।
- विद्यार्थियों को रिसर्च और प्रोजेक्ट पर काम करने के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित करना।
- ऐसे कार्यक्रम का आयोजन करना जो अपनी प्रकृति में अंतर–अनुशासनात्मक (Interdisciplinary) हो।